

उनके घरों के चारों ओर 7 फीट ऊँची दीवार है, क्या आप इसे खुली जेल कहना पसंद करेंगे?
“गरीब के लिए एनसीआर में जमीन का मालिक होना अपराध है”

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में (उत्तरप्रदेश के गौतमबुद्धनगर) थाना दादरी के तहत पड़ने गाँव रामगढ़ (चमरटोली) में 14 मार्च को ग्राम प्रधान कुलदीप भाटी के नेतृत्व में दबंग, गुंडा तत्वों ने दलित (जाटव) टोले में घुसकर दर्जनों पुरुषों, महिलाओं और बूढ़ों पर बर्बर हमला किया। इसमें तीन लोगों पर धारदार हथियार से जानलेवा हमला किया गया, इन घायलों को कई दिन आईसीयू में रहना पड़ा। ब्रह्म नाम का एक नौजवान गोली लगने से बाल-बाल बचा। दस से ज्यादा पुरुषों और महिलाओं के हाथ या पैर टूटे हैं, कई बूढ़ों और नौजवान सदस्यों को भी लाठी, डंडों और लोहे की राड से पीटा गया है।

सतपाल (उम्र ३०-३५ के बीच) जो निर्माण मजदूर है, काम से घर लौट रहा था, जब उस पर लोहे की राड और फरसे से सिर पर हमला कर बुरी तरह घायल कर दिया गया। इस हमले में उसकी खोपड़ी टूट गयी और शरीर से बहुत ज्यादा खून बह गया। उसे कई दिन आईसीयू में रखना पड़ा। यद्यपि वह हॉस्पिटल से डिस्चार्ज है लेकिन बोलने और चलने फिरने में असमर्थ है। संभवतः पूरी तरह से ठीक होने में उसे एकाध साल लग जायेंगे।

सतपाल की माँ, शकुंतला के पेट पर चोट का निशान था। उन्हें लोहे की राड से मारा गया। उन्होंने बताया कि उनका एक घुटना और एक पसली टूट चुकी है।

परकशी (50 वर्ष) पर उन्होंने लोहे की राड और कुल्हाड़ी से हमला किया। उसके सिर पर कई टाँके हैं व एक हाथ टूट चुका है।

रोहित(१७ वर्ष, परकशी का बेटा) घर लौट रहा था जब उस पर कुलदीप भाटी द्वारा हमला किया गया। गंभीर रूप से घायल रोहित इस बार अपने मैट्रिक की परीक्षा नहीं दे पाया।

नीरज(24 वर्ष, रोहित का भाई) पर कुल्हाड़ी से हमला किया गया। फकीरा नाम के एक 80 वर्ष के बूढ़े को भी नहीं बक्शा गया।

मंगत(50 वर्ष) जो अपनी मजदूरी पर जा रहा था, को पीटकर उसका हाथ तोड़ दिया गया। उसके सिर के टाँके साफ़ दिखाई दे रहे थे।

इस पूरे तांडव में औरतें, जो किसी भी हिंसा-हमले के समय आमतौर से आसान निशाना बनाई जाती हैं, ही सबसे ज्यादा घायल हुईं. सुशीला(40-45 वर्ष) जग्मीरी(45 वर्ष) उषा (35-36 वर्ष) बबिता (38वर्ष) बबली (18 वर्ष) बाबी (19 वर्ष) ने दबंग गुर्जर समुदाय द्वारा किये गए हमले और गाली-गलौज की आपबीती सुनायी. इनमें हर कोई टूटे हाथ या पैर अथवा सिर, पेट, पीठ पर जख्म के निशान लिए हुए थीं.

यकीन मानिए इतनी बड़ी घटना के बाद अब तक कोई गिरफ्तार नहीं हुआ है! प्रशासन ने मुजरिमों को फरार घोषित करने में ही ज्यादा तत्परता का काम किया है!

सर्वव्यापी मीडिया से ये घटना छुपी ही रही! अभी कुछ दिनों पहले आइसा नेतृत्व वाले जेएनयूएसयू (जवाहरलाल नेहरु छात्र संघ) के महासचिव रवि प्रकाश के नेतृत्व में इस घटना की जांच करने रामगढ़ पहुँची छात्रों की टीम यह सोचकर हैरान थी कि जैसा बताया जाता है ये सिर्फ दूरी और भूगोल का मामला नहीं है!

मोबाईल के ज़माने में ये सब 14 मार्च की दोपहर 1-2 बजे के बीच दिनदहाड़े हुआ. गाँव में अभी भी तनाव है. स्थिति नियंत्रण में रखने के लिए प्रशासन ने गाँव में पुलिस की एक जीप लगा दी है लेकिन दलित बस्ती के लोग इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि दरअसल ये पुलिस उन्हीं लोगों की निगरानी के लिए वहाँ है जिससे कि गाँव के दलित प्रतिरोध में खड़े न हो जाएँ. अब तक एक भी मुजरिम की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है. दादरी पुलिस द्वारा अधिकाँश अभियुक्तों पर हल्की धाराएं लगाने के चलते 6 अभियुक्त जमानत ले चुके हैं.

दलित नौजवानों में गुस्से का कारण यह भी है कि इस हमले के मुख्य आरोपी ग्रामप्रधान कुलदीप भाटी पर पुलिस ने शुरू से ही हल्की धाराएं लगाईं. वह भी जमानत ले चुका है. और दलित नौजवानों को फिर से मारने की धमकी देते हुए घूम रहा है.

पृष्ठभूमि : जमीन ही सवाल है

इस जघन्य और बर्बर हमले का मुख्य कारण दलित समुदाय के नाम सरकारी रिकार्ड में दर्ज तकरीबन 5 बीघे की जमीन है जिस पर ग्राम प्रधान कुलदीप सिंह भाटी और उसका परिवार कब्ज़ा करके बैठा है. इस जमीन को, जिसकी बाजार कीमत अब करोड़ों में है, कुलदीप भाटी ने छोटे छोटे प्लाट बनाकर बेचना भी शुरू कर दिया है.

इतना ही नहीं उन्होंने इस जमीन पर रह रहे तीन-चार दलित घरों के चारों तरफ से दीवार उठाकर आने जाने का रास्ता भी बंद कर दिया है. ये विश्वास करना कठिन है कि दिल्ली के इतने पास दलित परिवारों को जेल जैसी स्थितियों में रहना पड़ रहा है! घर से निकलने के लिए उन्हें 7 फीट ऊँची दीवार कूदने पड़ती है. हर रोज, हर बार!

जनवरी में पहली बार गाँव के नौजवान दलित लड़के ब्रह्म ने जब इस पर आपत्ति उठाई तो ग्राम प्रधान कुलदीप भाटी ने उसे हंसी-ठट्टे में टाल दिया था. आगे चलकर 24 जनवरी को ब्रह्म ने ये शिकायत एसडीएम से लिखित तौर पर भी की. इसके बाद उसे बार बार कुलदीप भाटी की तरफ से धमकियाँ मिलने लगीं. प्रधान को सबसे ज्यादा चिढ़ इस बात से थी कि जिस दलित बस्ती से उसने कभी विरोध के एक आवाज नहीं उठने दी थी, वहाँ के लड़के एसडीएम से शिकायत करने की जुर्रत कैसे कर सकते हैं. 14 मार्च को हुए हमले में वे लोग ब्रह्म को ही ढूँढ रहे थे. जांच करने गयी छात्रों की टीम को ब्रह्म ने बताया कि उसके ऊपर गोली चलाई जिससे वो बाल-बाल ही बचा.

एक फरवरी के दिन कुलदीप भाटी के बड़े भाई मंगीराम भाटी ने एक दलित नौजवान विनोद (30 वर्ष) से जबरदस्ती अपनी भैंस का मरा हुआ बच्चा फेंकवाया. विरोध करने पर विनोद की पिटाई की गयी. इस मामले को लेकर ब्रह्म व बस्ती के कुछ नौजवान पुलिस थाने गए हैं ये जानकार भाटी परिवार ने आतंक फैलाने के लिए एक और दलित नौजवान राकेश (25 वर्ष) जो राजमिस्त्री का काम करता है, की भी बुरी तरीके से पिटाई कर दी. एसएसटी एक्ट में मामला दर्ज होने के बावजूद भी किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई.

विधान सभा चुनाव के परिणाम आने के बाद स्थिति और भी बिगड़ी. दादरी क्षेत्र से बसपा उम्मीदवार सतवीर गुर्जर चुनाव जीते. जांच टीम को ग्रामीणों ने बताया कि हमलावर पिछली सरकार में अपनी असहायता की शिकायत कर रहे थे. उपरी तौर से देखने पर ये लग सकता है कि सपा समर्थकों ने जाटव समुदाय के लोगों पर सपा प्रत्याशी को वोट न करने के जुर्म में हमला किया. जबकि अगर हम थोड़ा ध्यान से देखें तो ये स्पष्ट हो जायेगा कि पूरे उत्तर प्रदेश में दलितों-वंचितों पर जमीन के सवाल पर लगातार प्रभुत्वशाली लोगों, जातियों द्वारा हमले हो रहे हैं. जैसा रामगढ़ के बगल के गाँव बिरौन्दा में हुआ.

रामगढ़ गाँव

रामगढ़ गाँव में सबसे ज्यादा संख्या जाटव दलित परिवारों की है तकरीबन 70 घर के आसपास. 12 घर गुर्जर हैं कुछ जाट. ज्यादातर जमीन गुर्जरों और जाटों के पास है. अधिकाँश दलित भूमिहीन हैं. दलितों की पुरानी पीढ़ी का गुर्जरों-जाटों के खेत में मजदूरी मुख्य पेशा था. दलितों की मौजूदा पीढ़ी ज्यादातर शहरों में आकर बिजली मैकेनिक, राजमिस्त्री इत्यादि के रोजगार में लगी हुई है. इक्का-दुक्का लोग १२वीं जमात के ऊपर पढ़ पाएँ हैं. सरकारी नौकरी में दलित बस्ती से सिर्फ एक व्यक्ति है.

गुर्जर-जाट ही गाँव के प्रधान होते आए हैं. सीट आरक्षित होने की स्थिति में वर्चस्वशाली समुदाय के लोग दलित बस्ती से अपने किसी वफादार को प्रधान बनवा देते थे.

रामगढ़ गाँव के किनारे खड़े होकर बाहर की तरफ देखने पर एक अजीब दृश्य उभरता है. गेहूँ के छोटे-छोटे खेतों के पार जहाँ दृश्यता थोड़ा धुंधलाने लगती है, एक दृश्यभंग होता है. वहाँ पर वो खड़ी हैं- बड़ी- बड़ी अट्टालिकाएं, माल्स और एक ही तरह की ऊँची-ऊँची इमारतें. यहाँ तक कि गेहूँ के खड़े खेतों में भी कहीं अंसल, सुशांत मेगापोलिस के बोर्ड सेक्टरों के नंबरों के साथ दिखने लगे हैं! आइये देखिये, शहर कैसे बनता है!

रामगढ़ और आसपास के गाँव अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं, संभवतः हारी हुई. रियल एस्टेट का समुद्र उन्हें निगल जाने के लिए पछाड़ें मार रहा है. नए-नए बन रहे अपार्टमेंट्स गाँव के चारों तरफ कुंडलीमार अजगर की तरह आगे बढ़ रहे हैं. कब तक बचेंगे ये?

जमीन ही सवाल है

जेएनयूएसयू की टीम को यह भी पता चला कि इस पूरे इलाके के कई गाँवों में इस तरह की अलग-अलग घटनाएँ हुई हैं. पास के ही एक गाँव बिरौन्दा में भी एक दलित परिवार की जमीन दबंग तत्वों ने कब्ज़ा कर ली है. (जांच टीम इस गाँव में भी पूछताछ के लिए गयी).

मेरठ की सरधना तहसील के गाँव सलाव में भी इसी तरह की घटना सामने आयी है जहाँ दलितों की बड़ी संख्या को सरकारी तौर से मिली 65 बीघे जमीन दबंग ठाकुरों ने जोत ली.

रामगढ़ गाँव में दलितों की जमीन छीन कर बाहर वालों को बेची जा रही है। इसके लिए कुलदीप भाटी परिवार ने लोकल स्तर के पटवारी व अन्य अधिकारियों को काफी पैसा खिलाया है।

एनसीआर दिल्ली के इलाके में रियल एस्टेट के फैलते जाल में जमीन सबसे मुख्य सवाल बन चुकी है। बड़े बड़े अपार्टमेंट्स- माल्स, महंगे आलीशान सिटी बनाने के लिए चल रही अंसल, जेपी जैसे कारपोरेट घरानों की मुहीम में गरीबों, दलितों की जमीन सबसे आसान निशाना है। फैलते हुए रियल एस्टेट बाजार ने जमीनी स्तर पर वर्चस्वशाली तबकों, स्थानीय अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और जमीन माफिया का एक खतरनाक गठजोड़ खड़ा कर दिया है। जैसे जैसे जमीन की कीमतें आसमान छू रही हैं, एनसीआर, गुडगाँव और नोयडा के इलाके में जमीन सबसे लुभावना, सबसे ज्यादा मुनाफे का निवेश बन चुकी है। ये ताज़ा जमीन है, उनकी जीभों पर खून का स्वाद लग चुका है। इसके चलते उत्तर प्रदेश और ग्रामीण इलाकों में खासकर गरीबों और दलितों के ऊपर बार-बार हमले हो रहे हैं और उनकी जमीन जबरिया कब्जाई जा रही है।

सामंती जोर-जुल्म और उत्पीड़न के खिलाफ अपनी जमीन और मान-सम्मान के लिए गरीबों और दलितों में बढ़ रही चेतना के चलते, खासतौर से भूमि-सुधार की मांग के चलते, वर्चस्वशाली तबकों द्वारा किये जा रहे हमलों की तीव्रता बढ़ती ही रही है।

निश्चय ही ग्रामीण इलाकों में आ रही चेतना और नयी सामाजिक शक्तियों को शुरू में ही कुचल देने के लिए ऐसे हमले संगठित किये जा रहे हैं। और नए कारपोरेट बाजार की जमीन की भूख इसका एक आधार भी मुहैया करा रही है।

दलित टोली के नौजवान लड़ने का मन बना चुके हैं। “जो अपमान हमारे बाप-दादा इतने दिनों से सहते आ रहे हैं, वो हमारे बच्चों को नहीं सहना पड़ेगा। हमारे लिए तो ये आजादी की लड़ाई है।” जब ब्रह्म ने बातचीत में कहा तो उसकी आँखें झपक नहीं रही थीं। आप अंदाजा लगा सकते हैं।